IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अंतर्गत इंटर्नशिप; एक अवलोकन"

डॉ0 राहुल कुमार पाण्डेय
प्राचार्य
तारकेश्वर नारायण अग्रवाल
कॉलेज आफ एजुकेशन, आरा बिहार

सारांश;

शिक्षा, व्यक्ति के लिए शिक्षक के रूप में आर्थिक और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षक और शिक्षक–प्रशिक्षकों से शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण उत्पादन प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षक बनना एक ऐसा पेशा है जो किसी भी ज्ञान और सूचना को प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों की व्यवसायिक शिक्षा का एक ठोस कार्यक्रम आवश्यक होता है। इसलिए शिक्षण दुनिया में सबसे चुनौतीपूर्ण व्यवसायों में से एक है। शिक्षण के इंटर्नशिप में सहयोग सुयोग्य पर्यवेक्षक के मार्गदर्शन में अभ्यास शिक्षण और क्षेत्र के अनुभव को विस्तृत विविधता भी शामिल है। इस अवधि में शिक्षार्थी अपने सैद्धांतिक समझ जो उसने शिक्षणशास्त्र कक्षाओं के माध्यम से पाई है, उनका परीक्षण करेगा। इंटर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम अपने वृहद उद्देश्यों और प्रारूपों के रखने के बावजूद भी उसकी पूर्ति करने में बाधा महसूस कर रहा है। इस कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण से संबंधित जिन गुणों का विकास होना चाहिए वह नहीं हो पा रहा है प्रशिक्षुओं को अनेक प्रकार की घटनाओं एवं समस्या का सामना करना पड़ता है।

शब्द कुँजी: शिक्षक–प्रशिक्षक, प्रशिक्षण, इंटर्नशिप, चुनौतियाँ, बाधां, पाठ्यक्रम

प्रस्तावना–

सुयोग्य शिक्षक में इस बात की नितांत आवश्यकता होती है कि शिक्षक अपनी पेशेवर पहचान को मजबूत करें एवं अपनी अस्मिता को पहचाने। स्कूलों में शिक्षकों के निष्पादन के संदर्भ में एक शिक्षक बनने की तैयारी और उसका व्यवसायिक विकास बहुत ही महत्वपूर्ण है, ऐसे में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों से यह अपेक्षा है कि वह ऐसे पेशेवर निपुण शिक्षक तैयार करें। जिनके द्वारा शैक्षिक व्यवस्था मजबूत हो सके। जब हम शिक्षक–शिक्षा की बात करते हैं तो उसे कई आयामों के द्वारा समझते हैं – जैसे शिक्षण व्यवसाय में आने वाले लोग कौन हैं? जो लोग इस व्यवसाय में प्रवेश करते हैं उनकी तैयारी? शिक्षक बनने के बाद उनका सतत पेशेवर विकास? अगर हम उपरोक्त पहलुओं पर ध्यान दें तो अनुभव और अवलोकन के आधार पर यह बात समझ में आती है कि शिक्षा व्यवसाय लोगों की प्राथमिकता नहीं है, ऐसे में इस व्यवसाय में प्रवेश करने वालों की तैयारी बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। जिसमें सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण भी शामिल होता है। परंतु चिंताजनक यह है कि जिस तरह यह प्रक्रिया चल रही है उस पर प्रश्नचिन्ह लगना स्वाभाविक है। विभिन्न आयोगों और नीतियों ने भी शिक्षक – शिक्षा पर चिंता जाहिर की और हमेशा करती रही है । **शिक्षा आयोग 1964 –66** में षशिक्षक शिक्षा को पेशेवर बनाने समेकित कार्यक्रम का विकास करने एवम इंटर्नशिप की सिफारिश की है। (**शिक्षक**

–शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र पेज नंबर 3) **चट्टोपाध्याय आयोग 1983–85** ने कहा यदि स्कूलों शिक्षकों से उम्मीद की जाती है कि वे पढ़ाने के उपागम में क्रांति लाएं व क्रांति पहले शिक्षा के कालेजों में होनी चाहिए। (**शिक्षक–शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह आधार पत्र पेज नंबर 2**) **यशपाल समिति** की रिपोर्ट शिक्षा बिना बोझ के 1993 के अनुसार ''शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की कमी के कारण स्कूलों में शिक्षण की गुणवत्ता असंतोषजनक रही है । स्कूली शिक्षा में हुए परिवर्तनों के संदर्भ में इस कार्यक्रम की प्रासंगिकता को सुनिश्चित करने के लिए इसकी विषय वस्तु का पुनः निर्माण किया जाए। इन कार्यक्रमों में इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि प्रशिक्षणर्थी स्वअधिगम तथा स्वचिंतन योग्यता प्राप्त कर सके।''

योग्य शिक्षकों को इसी गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली द्वारा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद जैसी एक संस्था निर्मित की गई है, जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का निर्माण होता रहता है यथा– बी.एड., डीएलएड, इंटीग्रेटेड बी. एड. इंटीग्रेटेड डी.एल.एड., एम.एड.। सेवा के मध्य तथा सेवापूर्व तमाम प्रकार के कार्यक्रम इस आशय से निर्मित किए जाते हैं कि निश्चित समय अवधि में एवं नियमानुसार प्रशिक्षण प्राप्ति के उपरांत भावी शिक्षक निर्मित होंगे और उनके द्वारा अपनी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन तभी किया जा सकेगा जब वे योग्य और कुशल होंगे।

❖ शोध के अंतर्गत संप्रत्ययो का परिभाषीकरण

शोध विषय ''शिक्षक– प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अंतर्गत इंटर्नशिप; एक अवलोकन के अंतर्गत प्रयुक्त संप्रत्ययो का स्पष्टीकरण निम्नांकित है–

• शिक्षक;

''एक व्यक्ति जो छात्रों को ज्ञान योग्यता या गुण प्राप्त करने में मदद करता है, जो औपचारिक शिक्षा के संदर्भ में दूसरों को पढ़ाने के लिए जैसे – स्कूल में मुख्य भूमिका के रूप में कार्यरत है। शिक्षक वह व्यक्ति होता है जो लोगों को शिक्षा प्रदान करता है वह जो सिखाता या निर्देश देता हूं।

अन्य शब्दों में कहें तो शिक्षा देने वाले व्यक्ति को शिक्षक, गुरु या अध्यापक कहते हैं । जो छात्र के मन में सीखने, अधिगम करने, जिज्ञासा को जागृत करने में मदद करता है।

शिक्षक एक हिंदी शब्द है संस्कृत में इसे गुरु, इंग्लिश में टीचर कहते है। शिक्षक के पर्यायवाची पुरुष में अध्यापक, गुरु तथा स्त्री अध्यापिका, गुरु, माता, शिक्षिका है।

• प्रशिक्षण का अर्थः

सन 1911 में लंदन में **रोजगार विभाग द्वारा प्रकाशित** प्रशिक्षण के कठिन शब्दों की सूची में ट्रेनिंग शब्द को परिभाषित किया गया –

''किसी दिए गए कार्य को उचित ढंग से संपादित करने के लिए किसी व्यक्ति विशेष के दृष्टिकोण अभिवृत्ति ज्ञात कौशल एवं व्यवहार के क्रम विकास का नाम ही प्रशिक्षण है।''

• शिक्षक – प्रशिक्षण

शिक्षक – प्रशिक्षण से तात्पर्य ऐसे प्रशिक्षण से है जो प्रशिक्षुओ को अध्यापन हेतु प्रशिक्षित करता है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण वह संप्रेषण व्यवहार है, जिसमें आचरण तथा व्यवहार के परिवर्तन पर अधिक बल दिया जाता है इसमें मनोसंज्ञानात्मक विकास पर भी बल दिया जाता है, तथा उनके अभ्यास एवं प्रयास को अधिक महत्व मिलता है । इस आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण एक ऐसी धारणा है जिसमें प्रत्येक को शिक्षण कार्य में पारंगत होने की अपेक्षा की जाती है।

शिक्षक – प्रशिक्षण एक व्यापक प्रक्रिया है जिसे मात्र किसी कौशल या कार्य के निष्पादन तक सीमित नहीं किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति के अंतर्निहित क्षमताओं का विकास समग्र रूप से करने के साथ ही उसके वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय दृष्टि के संदर्भ में उपयोगी तथा संसाधन संपन्न व्यक्तित्व के लिए प्रयत्न किया जाता है।

- **शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमः**

शिक्षक–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है समयानुसार अध्यापक शिक्षा का विस्तारीकरण होता रहा है, शिक्षक शिक्षा एक ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम है जिसमें विभिन्न स्थितियो और वर्गों के अनुरूप अध्यापकों को सूचित करने का प्रयत्न किया जाता रहा है, शिक्षण को एक उद्यम या प्रोफेशन के रूप में स्वीकार करने के लिए या नितांत आवश्यक है। शिक्षक शिक्षा मात्र एक कार्यक्रम नहीं है बल्कि एक ऐसा मिशन का आयोजन भी है जिसके द्वारा राष्ट्रीय संदर्भ में आधुनिक परिवर्तित अध्यापक की भूमिका के निर्वाह के लिए दक्षता तथा कुशलता प्राप्ति हेतु व्यक्तियों को सूचित किया जाता है। शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के विभिन्न प्रकारो का विवेचन निम्नांकित है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने पूरे देश में अध्यापक शिक्षा के नियोजित और समन्वित विकास को प्राप्त करने और अध्यापक शिक्षा के लिए मानदंडों और मानकों का विनिमयन और उचित रखरखाव की व्यवस्था करने के आदेश के साथ राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद अधिनियम 1993 के अनुसरण में भारत सरकार के एक संवैधानिक निकाय के रूप में 17 अगस्त 1995 को अस्तित्व में आई थी।

इसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों का क्षेत्र बहुत व्यापक है जिसमें सभी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम या पाठ्यक्रम जैसे प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा (डी.एल.एड) स्नातक प्रशिक्षण (बी. एड.) स्नातकोत्तर प्रशिक्षण (एम.एड.) इत्यादि शामिल हैं।

इसमें एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप की नई स्कूल प्रणाली के आधारभूत प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने के लिए छात्रों– अध्यापकों का अनुसंधान और प्रशिक्षण भी शामिल है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप अन्य अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में यानी बिनयमन, पाठ्यक्रम और डिजिटल वास्तुकला का संशोधन किया जा रहा है।

एन.ई.पी. 2020 में सेवा –पूर्व अध्यापक शिक्षा और सेवाकालीन अध्यापक अध्यापक क्षमता निर्माण पर विशेष जोर देने के साथ अध्यापकों की भूमिका में आमूलचूल परिवर्तन की परिकल्पना की गई है।

- **इंटर्नशिप कार्यक्रम**

इंटर्नशिप कार्यक्रम का अर्थ ''किसी सामर्थ्यवान पर्यवेक्षक के निर्देशन में व्यवहारिक ज्ञान व अनुभव प्राप्त करने को समाहित करता है। जिसमें प्रशिक्षणार्थी अपने सैद्धांतिक ज्ञान का जिसे उसने कक्षाओं में सीखा है, उसका परीक्षण एवं अनुप्रयोग करता है। यहां इंटर्नशिप प्रशिक्षण में वे सभी महत्वपूर्ण अनुभव सम्मिलित हैं जो वास्तविक कार्य क्षेत्र में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त किए जाते हैं, यह कार्यक्रम सार्थक कौशलों का विकास करने के साथ–साथ विद्यार्थियों में संबंधित व्यवसाय के प्रति संवेदनशीलता एवं विशिष्ट अभिवृत्ति का विकास करता है।

मैक मोहन यू एंड क्लीन यू (1995) ने कहा है कि इंटर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम निरीक्षण योग्य कार्यानुभव है। जिसमें विद्यार्थी अपने संस्थान को छोड़ता है और कार्य आधारित कार्यक्रमों में व्यस्त हो जाता है एवं उस समय अवधि के दौरान वे उस पेशे में उपस्थित आश्रय द्वारा बारीकी से निरीक्षण किए जाते हैं।

फ्यूरको (1996) के अनुसार इंटर्नशिप को विद्यार्थियों को सेवा गतिविधियों में व्यस्त रखने या लगाए रखने के कारण कार्यक्रम के रूप में परिभाषित किया गया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उन्हें कार्य आधारित अनुभव प्रदान करना एवं उनके अंदर क्षेत्र विशेष से संबंधित प्रासंगिक मुद्दों की समस्या ज्ञान में वृद्धि करना है अतः किसी भी व्यवसायिक शिक्षा में स्थान बंद प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए एक उपयोगी लाभकारी घटक है।

एन.सी.टी.ई. ने उपरोक्त ध्यान में रखते हुए डी.एल.एड. तथा बी.एड. एवं एम.एड. पाठ्यक्रम को 2 वर्ष का निर्धारित किया एवं शिक्षण कार्य के सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए वास्तविक कार्य क्षेत्र में इंटर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करने हेतु दिशा निर्देश दिए थे। जिससे की गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तैयार हो सके तथा उनमें व्यवहारिक पूर्ण विकसित हों सके। उनमें व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यालय में समावेशी अभिवृत्ती, नवीन शैक्षिक कौशलों का विकास हो।

❖ शिक्षक – प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप कार्यक्रम की गतिविधियों का विश्लेषणः–

भारत में 2030 तक दुनिया की सर्वाधिक कामकाजी जनसंख्या प्रत्याशित है, भारत के इस विलक्षण जनसंख्या सांख्यिकी बढ़त का लाभ उठाने के लिए न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना अनिवार्य है, बल्कि रोजगार पर बनाने की दृष्टि से भी इसे प्रासंगिक बनाना है। सतत विकास लक्ष्यों के साथ भारत सरकार ने युवाओं को नौकरी बाजार में भाग लेने और रोजगार सेवक तक पहुंचाने के लिए विभिन्न पहल की है, इसके बाद भी हमारे विश्वविद्यालयों के अधिकांश उपाधि प्राप्त विद्यार्थी के लिए रोजगार के सीमित अवसर एक प्रमुख चुनौती है, विशेष रूप से जब हम सामान्य डिग्री कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए विचार करते हैं तो उनके लिए रोजगार के अवसर एक प्रमुख चुनौती बनकर सामने आती है। इसके लिए मुख्य उत्तरदायी कारक है उनका रोजगार योग्य नहीं होना। इसलिए कक्षा में क्या पढ़ाया जाता है और समाज के लिए क्या आवश्यक है के बीच के अंतर को कम करने की आवश्यकता है।

रोजगार के क्षेत्रों के लिए आवश्यक क्षमता को हमारे विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में जोड़ने की आवश्यकता है ताकि रोजगार तथा रोजगार क्षमता के बीच के अंतर को समाप्त किया जा सके।

शब्द इंटर्नशिप सीधे चिकित्सा पेशे के उधार पर लिया गया है। चिकित्सा शिक्षा शब्द अस्पताल के अनुभव पर लागू होता है, जहां क्षेत्र के अनुभव के लिए चिकित्सा चिकित्सक को अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन की आवश्यकता है, इससे पहले कि वह स्वयं अभ्यास करें। इस प्रकार इंटर्नशिप शिक्षक की व्यवसायिक तैयारी का एक अभिन्न हिस्सा है आज के दिनों में लग रहा है कि शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में हमारी पारंपरिक शिक्षा तथा अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर रही है। शिक्षण में इंटर्नशिप में सहयोग सुयोग्य पर्यवेक्षक के मार्गदर्शन में अभ्यास शिक्षण और क्षेत्र के अनुभव को विस्तृत विविधता भी शामिल है। इस अवधि में शिक्षार्थी अपने सैद्धांतिक समझ जो उसने शिक्षणशास्त्र कक्षाओं के माध्यम से पाई है, उनका परीक्षण करेगा

इसी क्रम में शिक्षक शिक्षा या प्रशिक्षण में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम B.Ed., D.El.Ed., M.Ed. में भी इंटर्नशिप कार्यक्रम को वर्ष 2014 में एन.सी.टी.ई. ने अनिवार्य कर दिया। दिवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष में 24 दिन एवं द्वितीय वर्ष में 96 दिन के लिए इंटर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम को रखा गया। इंटरशिप के द्वारा भावी शिक्षकों को शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने और शैक्षिक व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए कई प्रकार के घटकों को इस इस कार्यक्रम में शामिल किया गया। इंटर्नशिप के विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से प्रशिक्षणार्थी विद्यालय परिवेश से परिचित होने के साथ–साथ अपने प्रयोगात्मक कार्य को पूर्ण करते हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में बढ़ोतरी होती है साथ ही शिक्षा व्यवसाय के विभिन्न कौशलों का अर्जन भी करते हैं।

1. वर्गों का अवलोकनः

विभिन्न विश्वविद्यालयों के बोर्ड आफ स्टडीज द्वारा निर्मित पाठ्यक्रमों में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रथम वर्ष के इंटर्नशिप कार्यक्रम में कक्षा अवलोकन को विषय वस्तु बनाया गया है जिसमें प्रशिक्षणार्थी संबंधित स्कूलों में जाकर वहां अध्यापनरत शिक्षकों के पठन–पाठन कौशल तथा कक्षागत व्यवहार का अवलोकन करते हैं और उसके द्वारा अपने अंतर्गत कौशलात्मक विकास एवं प्रशिक्षण के द्वारा ज्ञानार्जन करते हैं। यह एक प्रकार की ऐसी विधा है जो अनुकरण पर आधारित

व्यवस्था प्रदान करती है ।यदि इस व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित किया जाए तो मनोवैज्ञानिक सिद्धांत का अनुप्रयोग किस प्रकार कक्षागत व्यवहार में करना है इसको सीखने में मदद मिलती है।

2. शिक्षण कक्षा का अभ्यासः

द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षण में 120 कार्य दिवस या विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु निर्धारित दिवस में शिक्षण कक्षा का अभ्यास अपने संबंधित स्कूली विषयों में करने के लिए 20–20 पाठ योजना पढ़ाने का व्यवस्था की गई है। प्रशिक्षणार्थी सहकारी शिक्षकों के साथ अच्छी तरह से परिचित होता है ताकि वे एक साथ काम कर सके, अपने कार्यो का अनुमोदन और पाठ की योजनाओं शिक्षण तकनीकों और अन्य दैनिक गतिविधियों के बारे में सुझाव के लिए चर्चा करें, छात्र शिक्षक से उम्मीद की जाती है कि वह स्कूल के तत्वज्ञान पाठ्यक्रम संगठन के प्रकार और अन्य गतिविधियां के साथ खुद को परिचित करें ताकि वह अपने दिमाग में कुल स्थिति की एक तस्वीर बना सकें। उससे कुछ चयनित सह पाठयक्रम के संगठन प्रशासनिक गतिविधियों में अपने स्वाद और क्षमताओं के अनुसार भाग लेने के सही अनुभव के उम्मीद की जाती है। वह स्कूल के भी कुछ नियम नियमित मामलों का प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

❖ इंटर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम में लक्ष्यप्राप्ति के समक्ष बाधा या चुनौतियाँः

इंटर्नशिप स्कूल के शिक्षकों के लिए असली तैयारी है, यह शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को यथार्थवादी बनाता है, यह स्कूल के कामकाज में अंतर्दृष्टि विकसित करता है, क्रियामुलक ज्ञान प्रशिक्षण सीखने के लिए बेहतरीन तकनीक है इसके द्वारा आत्मविश्वास और शिक्षण की रचनाओं को विकसित किया जाता है। जब स्कूल के छात्र इंटर्नशिप के शिक्षण में रुचि लेते हैं तो वह अध्यापक छात्र अपने छात्रों के साथ संबंध स्थापित करते हैं। वास्तव में स्कूल की कक्षाएं कार्यशाला प्रयोगशाला इन कार्यसलाओ में अपने शिक्षण के कार्य करती है।

निसंदेह इंटर्नशिप को शिक्षा के शिखर के रूप में देखा जा सकता है और वास्तविक दुनिया स्थापित करने के लिए कक्षा में सिखाए गए कौशलों का उपयोग करने का मौका देती, यह मौका है अपनी योग्यता को लायक साबित करने के लिए दिखाने के लिए आप अपनी भूमिका में प्रदर्शन कर सकते हैं जो कि आपको दिया जाए, इसके बावजूद इंटर्नशिप की अपनी सीमाएं हैं इसको सिद्धांत के रूप में लागू करने के तमाम प्रकार की बाधाएं या चुनौतियाँ प्राप्त होती हैं जो निम्नांकितः–

1. इंटर्नशिप कार्यक्रमों को निर्धारित प्रारूप में संचालित करने में सर्वप्रथम स्कूलों के चयन की समस्या मिलती है, शिक्षक–शैक्षिक संस्थानों में प्रवेश की मांग के ज्यादा होने से उनके इंट्रशिप हेतु प्रचुरता के साथ स्कूल मुहैया नहीं हो पा रहे।
2. कक्षा अवलोकन कार्यक्रम में संबंधित विद्यालयों के नियुक्त शिक्षक अपनी कक्षाओं में प्रशिक्षणार्थियों को बैठने की अनुमति नहीं प्रदान करते हैं क्योंकि उनकी योग्यताओं और कौशलों का ज्ञान प्रशिक्षणार्थियों को हो जाएगा जिसके लिए वो आत्मविश्वास में कमी रखते हैं और आदर्श शिक्षण की प्रकृति से बचते हैं अतः कक्षा अवलोकन कार्यक्रम जिस उद्देश्य से प्रशिक्षण कार्यक्रमों में रखा गया है उसकी पूर्ति संबंधित स्कूलों के शिक्षकों के द्वारा नहीं होने दी जाती है।
3. कक्षा शिक्षण अभ्यास कार्यक्रमों में प्रशिक्षु स्कूलों में निर्धारित पाठ योजनाओं को प्रस्तुत करने के लिए जब पहुंचता है तो स्कूलों के प्रधानाचार्य या प्रभारी उनसे अपनी कक्षाओं को पढ़ाने पर जोर देते और पाठ योजनाओं को बाद में पूर्ण करने की बात कहते हैं यह भी देखा गया है कि संबंधित स्कूलों के शिक्षक और प्रधानाचार्य इस बात का इंतजार करते हैं की प्रशिक्षण छात्र कब उनके पास आते हैं उस दरमियान वे सभी कक्षा गत कार्यों को प्रशिक्षुओं के ऊपर थोपते हैं जिससे प्रशिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति होने में समस्या आती है।
4. शिक्षक तैयार करने के अनेकों संस्थानों की एक अच्छी संख्या कदाचार में भी लिप्त है छात्रों के इंटर्नशिप ना करनी है के जिसके एवज में मोटी धन उगाई का प्रचलन जोर पकड़ रहा है, जिससे छात्र बने बनाए पाठ योजनाओं को प्राप्त

कर अपनी पाठ योजना निर्मित करते हैं और संबंधित स्कूलों में न जाकर वहां के प्रधानाचार्य से प्रमाण पत्र येन केन प्रकारेण प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि निजी संस्थानों में सब देखरेख निजी व्यवस्था के हाथ में होती है अतः यह कदाचार इंटर्नशिप के उद्देश्यों की पूर्ति करने में बाधक सिद्ध होते हैं।

5. इंटर्नशिप ऐसे समय में होती है जब विद्यालयों में परीक्षा का आयोजन होता रहता है इस दौरान प्रशिक्षुओं की विभिन्न प्रकार की ड्यूटी लगा दी जाती है जिससे उनके मूल उद्देश्य पूरा होने में समस्या होती हैं।
6. इंटर्नशिप की अवधि का विस्तार होने से लंबे समय तक कोई भी स्कूल प्रशिक्षण संस्थानों के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पा रहा है क्योंकि उनके अपने उद्देश्यों की पूर्ति होने में बाधाएं पहुंच रही हैं।
7. देखा गया कि इंटर्नशिप को लेकर स्कूलों को ओरियंटेशन वर्तमान विचार के अनुरूप नहीं है उदाहरण के लिए एक पेपर में प्रैक्टिकम दिया हुआ है जिसमें विभिन्न परियोजनाओं के संबंध में सर्वे करके रिपोर्ट तैयार करनी है परंतु स्कूल अपने स्तर से किसी प्रकार की सूचना साझा करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार नहीं है प्रशिक्षु अपने स्तर पर ही स्कूलों में बाहर लगी सूचनाओं से अपनी रिपोर्ट तैयार करते हैं।
8. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सहायक प्राध्यापको को सुपरवाइजर के रूप में स्कूल में जाकर मूल्यांकन या मार्गदर्शन प्रदान करना होता है परंतु प्रथम वर्ष के प्रशिक्षुओं के कक्षागत दायित्व बोध एवं अन्य कारणो से भी स्कूल में उनकी उपस्थिति नही हो पाती जिसके कारण उचित मेंटरशिप का अभाव होता है और उद्देश्यों की पूर्ति बाधक होती है।

इस प्रकार हम यह पाते हैं कि इंटर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम अपने वृहद उद्देश्यों और प्रारूपों के रखने के बावजूद भी उसकी पूर्ति करने में बाधा महसूस कर रहा है। इस कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण से संबंधित जिन गुणों का विकास होना चाहिए वह नहीं हो पा रहा है प्रशिक्षुओं को अनेक प्रकार की घटनाओं एवं समस्या का सामना करना पड़ता है।

❖ शिक्षक–प्रशिक्षण के इंटर्नशिप की चुनौतियों से निपटने हेतु सुझावः–

सर्वप्रथम इंटर्नशिप की अवधारणा को और इसके मूल विचार को संबंधित स्कूलों में साझा किए जाने की आवश्यकता है, फॉलोअप हेतु स्कूल सुपरवाइजर और शिक्षक–प्रशिक्षुओं के बीच भी संवाद प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इंटर्नशिप का संचालन करने की जिम्मेदारी संयुक्त रूप से केंद्रीय स्तर के शिक्षक–शिक्षा नियामक, राज्य शिक्षा विभाग, मान्यता प्राप्त संस्थान, शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान एवं इंटर्नशिप विद्यालयों की होनी चाहिए। एन.सी.टी ई. की तरफ से राज्य सरकारों एससीईआरटी को इंटर्नशिप के संदर्भ में मार्गदर्शन उत्तर दायित्व देना चाहिए साथ ही संबंधित मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों एवं इंटरशिप स्कूलों में भी संबंधित हैंडबुक का वितरण करना जरूरी है।

स्कूल इंटर्नशिप फ्रेमवर्क गाइडलाइन जनवरी 2016 एन.सी.टी.ई. के प्रारूपों को राज्य सरकार और केंद्र सरकारों के द्वारा लागू करना अति आवश्यक है।

इंटर्नशिप कार्यक्रमों के मूल्यांकन की प्रक्रिया को सुदृढ नींव मजबूत बनाना पड़ेगा इसके लिए सतत एवं निरंतर मूल्यांकन प्रवृत्ति विकसित करनी पड़ेगी और उसे लागू करना पड़ेगा जिसके लिए केंद्रीय संस्थाओं के संरक्षण में व्यवस्था विकसित की जा सकती है ताकि कदाचार मुक्त व्यवस्था हो सके।

इंटर्नशिप में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में आय प्राप्ति का साधन भी विकसित करना चाहिए जिससे छात्रों में अपने कार्यों के प्रति गंभीरता एवं सजगता विकसित हो सके और कर्तव्य बोध की भावना जागृत हो सके।

❖ निष्कर्षः–

समग्र अवलोकन उपरान्त यह पक्ष उभरकर निकला है कि इंटर्नशिप की मूल अवधारणा को उस रूप में नहीं लिया गया है जैसा कि इसे संकल्पित किया गया है। इंटर्नशिप की अवधि तो बढ़ा दी गई पर स्वरूप पुराना ही दिखाई पड़ता है, जो पाठ–योजना की डिलीवरी आलोचनात्मक पाठ योजना, फाइनल पाठ योजना एक्शन रिसर्च, सूक्ष्म शिक्षण योजना, प्रशिक्षुओं द्वारा किए गए कार्यों का प्रदर्शन, समुदाय भ्रमण तक ही सीमित है।

शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप की अवधारणा महत्वपूर्ण है पर उसे उस विचार के साथ अमल में नहीं लाया गया जहां भी प्री इंटर्नशिप की अवधि में प्रशिक्षण से अपेक्षा थी कि वे स्कूलों में जाकर अवलोकन करें और स्वयं को स्कूल के लिए तैयार करें। वहां उस अवधि में भी प्रशिक्षु औपचारिक पाठ योजनाएं बनाकर प्रैक्टिस टीचिंग की है। विभिन्न तरह के विद्यालयों के अनुभव लेने को लेकर भी किसी तरह के प्रयास देखने को नहीं मिलते। इंटर्नशिप को लेकर विश्वविद्यालय से शिक्षा विभाग और विद्यालय में संवाद की कमी दिखाई दी ऐसा प्रतीत होता है कि संबंधित संस्थानों के द्वारा स्कूलों की इंटर्नशिप अवधारणा को पर्याप्त रूप से साझा नहीं किया गया और ठीक तरीके से मेंटरिंग न मिलने के कारण प्रशिक्षु वास्तविक रूप से वो नही सीख पाए जिसकी उन्हें आवश्यकता थी ।वहीं पर गैर सरकारी विद्यालय और सरकारी विद्यालयों के बीच की खाई भी महसूस किया जा सकता है सरकारी शिक्षण संस्थाओं में अभी भी कुछ व्यवस्थाओं को लागू करते हुए पाया जा रहा है जबकि गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों में कदाचार का बोलबाला है इस प्रकार शिक्षक कार्यक्रम में सीखने सिखाने की प्रक्रिया रूटीन तक सीमित है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

- कुमार डॉ0 दिनेश, अध्यापक शिक्षाः – प्रकाशक लबली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी
- कुमार डॉ0 दिनेश, शिक्षक में इंटर्नशिप का मूल्यांकन प्रकाशक लबली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी
- कुमार डॉ0 दिनेश, शिक्षण मे इंटर्नशिप – संगठन पर्यवेक्षण प्रकाशक लबली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी
- कुमार डॉ0 दिनेश, अनुकरणीय शिक्षण – अवधारणा उद्देश्य प्रक्रिया प्रकाशक लबली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी
- पाल कुलविन्दर, शिक्षण में इंटर्नशिप में गुण एवं अवगुण प्रकाशक लबली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी
- शर्मा डॉ0 एन0 के0, अध्यापक शिक्षा–एस0 के पब्लिसर्स नई दिल्ली
- रितुवाला डॉ0 सी0पी0 पालिवाल, शिक्षक – शिक्षा में बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के लिए स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रासंगिकता (प्रकाशक IJEM MASSS, ISSN 2581-9925 Page 257-262)
- उपाध्याय डॉ0 शिव कुमार/डॉ0 प्रदीप कुमार, अध्यापक शिक्षण – नवराज प्रकाशक दिल्ली
- एजुकेशनल मैनेजमेन्टः सिद्धान्त और व्यवहार, जे0 ए0 आकुम्बे, पब्लिशर बैरोवी युनिवर्सिटी प्रेस 1981
- अप्रेंटिशिप/इंटर्नशिप युक्त डिग्री कार्यक्रम हेतु उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों के लिए यु0जी0सी0 के दिशा निर्देश (2009)
- एन.सी.टी.ई. स्कूल इंटर्नशिप : फेमवर्क एंड गाइडलाइन जनवरी (2016)